जामिया मिल्लिया इस्लामिया
जनसंपर्क एवं मीडिया समन्वयक कार्यालय
प्रेस विज्ञप्ति 09, दिसंबर 2020

जामिया ने भू-स्थानिक तकनीकों के ज़रिए क्षमता निर्माण पर एक सप्ताह की ऑनलाइन कार्यशाला आयोजित की

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के भूगोल विभाग ने यूजीसी एसएपी-डीआरएस -1 कार्यक्रम के तत्वावधान में, रिसर्च स्कॉलर्स और पीजी छात्रों के लिए 'भू-स्थानिक तकनीकों माध्यम से क्षमता निर्माण' पर एक सप्ताह की आॅनलाइन वर्कशाॅप का आयोजन किया। एक दिसंबर को शुरू हुई इस कार्यशाला का छह दिसंबर को समापन हुआ।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (आईएसआरओ) के देहरादून स्थित, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ रिमोट सेंसिंग (आईआईआरएस) के निदेशक, डॉ प्रकाश चैहान इस वर्कशाॅप के समापन सत्र के मुख्य अतिथि थे। कुलपति के सलाहकार और मानविकी एवं भाषाई फैकल्टी के डीन मो असदुद्दीन इस समारोह में गेस्ट ऑफ ऑनर थे।

जामिया की कुलपति, प्रो नजमा अख़्तर ने एक दिसंबर, 2020 को इस कार्यशाला का उद्घाटन किया था।

भूगोल विभाग के प्रोफेसर एम इश्तियाक के स्वागत भाषण से समापन सत्र शुरू हुआ। उन्होंने मुख्य अतिथि का स्वागत करते हुए, जामिया और आईआईआरएस के संबंधों के बारे में भी विस्तार से बताया।

इस वर्कशाप में जामिया सहित जेएनयू, दिल्ली विश्वविद्यालय, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, बर्दवान विश्वविद्यालय, आलिया विश्वविद्यालय, आरजीयू- अरुणाचल प्रदेश, उस्मानिया विश्वविद्यालय, टीआईएसएस, मुंबई, कश्मीर विश्वविद्याल, जम्मू विश्वविद्यालय वैगरहा के 58 पीएचडी और स्नातकोत्तर छात्रों ने हिस्सा लिया।

कार्यशाला के और यूजीसी-डीआरएस-एसएपी-1 के समन्वयक प्रो अतीकुर्रहमान ने वर्कशाॅप की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की।

वर्कशाॅप में हिस्सा लेने वालों ने देश-विदेश के विशेषज्ञों द्वारा पेश की गई गुणवत्तापूर्ण जानकारी की बहुत सराहना की। इसमें बांग्लादेश के राजशाही विश्वविद्यालय, केएसए की किंग खालिद यूनिवर्सिटि, शंघाई-चीन की ईस्ट चाईना नार्मल यूनिवर्सिटी के विशेषज्ञों की खास तौर पर सराहना हुई।

ब्रिटेन के मैनचेस्टर विश्वविद्यालय और भारत के जेएनयू, डीयू, जेएमआई, पंजाब विश्वविद्यालय, आईआईटी- रुड़की, टीईआरआई विश्वविद्यालय, दिल्ली, पीएचएफआई-दिल्ली और आईआईआरएस के शीर्ष विशेषज्ञों ने सप्ताह भर की कार्यशाला के दौरान व्याख्यान दिए।

प्रो असदुद्दीन ने विषयों में ठहराव के बारे में चर्चा करते हुए दुनिया में बदलते तकनीकी विकास के साथ विषयों को विकसित करने के महत्व के बारे में बताया।

मुख्य अतिथि, डॉ प्रकाश चैहान ने समापन संबोधन दिया, जिसमें उन्होंने रिमोट सेंसिंग के इतिहास, अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी के नवीनतम विकास और इस तरह के विकास में भारत के योगदान के बारे में बताया।

उन्होंने छात्रों को महामारी, जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग होने वाली समस्याओं पर अध्ययन करने लिए प्रेरित किया।

कार्यशाला के उप समन्वयक, डॉ अरुणा पारचा ने वैलेडिक्ट्री सत्र का संचालन किया।

यूजीसी-डीआरएस-एसएपी-1 की उप समन्वयक और भूगोल विभाग प्रमुख प्रोफेसर मैरी ताहिर के धन्यवाद प्रस्ताव से वर्कशाप का समापन हुआ। प्रो मैरी ने कार्यशाला के साथ-साथ अन्य शैक्षणिक कार्यक्रमों के आयोजनों में लगातार समर्थन और प्रोत्साहन देने के लिए कुलपति, प्रो नजमा अख्तर का खासतौर पर धन्यवाद किया।

अहमद अज़ीम
जनसंपर्क अधिकारी एवं मीडिया समन्वयक